शौचालय निर्माण को लेकर ओमप्रकाश बना पड़ोसियों का प्रेरणा स्त्रोत

ओमप्रकाश राजपूत जिसकी उम्र कुल 28 साल है जुडावन गावं में रहता है यह गांव टीकमगढ़ जिले से 16 कि.मी. की दूरी पर बसा हुआ है जब ओमप्रकाष छोटा था तब पोलियो के कारण उसे अपने पैर खोने पडे और वो विकलांग हो गया। ओमप्रकाश के दो भाई एवं दो बहनें हैं ओमप्रकाश के पिता के पास अपनी तीन एकड जमीन है एवं वह बाकी समय में दूसरों के खेतों में मजदूरी करते हैं ओमप्रकाश की मां बसंती घरेलु महिला हैं और घर पर ही रहती हैं घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण ओमप्रकाश अपनी स्कूली शिक्षा पूरी नहीं कर पाया साथ ही पोलियो भी इसके पीछे एक बड़ा कारण रहा क्योंकि उसका स्कूल लगभग 5 किलोमीटर दूर था इन सब कारणों के चलते ओमप्रकाश ने 10 वीं के बाद पढाई छोड़ दी और स्वयं से मोबाइल रिपेयरिंग एवं इलैक्ट्रेनिग का काम षुरू किया।

इस काम से ओमप्रकाष को प्रतिमाह 2000 से तीन हजार तक की आय हो जाती है। लेकिन घर में षौचालय न होने की बजह से ओमप्रकाष षौच आने जाने को लेकर काफी परेषान था।

एम.पी.वॉस कार्यक्रम के अंतर्गत जुडावन गांव में सामुदायिक जागरूकता हेतु बैठक का आयोजन किया गया जिसमें स्वच्छता के बारे में जागरूकता एवं कम कीमत वाले शौचालय के बारे में जानकारी दी गई। इस बैठक में ओमप्रकाश भी आया हुआ था उसने सारी बातों को ध्यान से सुना और बहुत गहराई तक प्रभावित हुआ। इसी बैठक के दौरान ओमप्रकाश ने अपने शौचालय का मॉडल भी तय किया एवं संकल्प लिया कि वो अपने घर में शौचालय बनाएगा एवं बाहर शौच के लिए न खुद जाएगा न ही अपने घर के किसी सदस्य को जाने देगा।

ओमप्रकाष के सामने मुख्य चुनौती परिवार को समझाने की थी इसके लिए उसने सबसे पहले अपनी मां को सहमत किया इस प्रक्रिया में बहुत समय लगा, ओमप्रकाश की मां का कहना था कि घर में शौचालय बनाना धर्म के अनुसार ठीक नहीं है एवं साथ ही दूसरी चुनौती थी उसें घर की आर्थिक स्थिति का कमजोर होना। लेकिन ओमप्रकष ने घर में सभी को सहमत कर लिया। लेकिन दूसरी

समस्या ओमप्रकाश के सामने थी कि ओमप्रकाष के पिताजी ने शौचालय के लिए सैप्टिक टेंक चुना एवं इस हेतु कुल खर्चा 40000 हजार रू अंदाजा लगाया गया बालचंद ने साहूकार से 18000 रू कर्जा लिए एवं बाकी 22000 रू स्वयं के खर्चे से व्यय किए इन्होंने 2014 में मार्च के महीने में निर्माण कार्य शुरू कर दिया यह कार्य परहित संस्था की देखरेख में किया गया।

ओमप्रकाश के आत्मविश्वास की वजह से उसके घर में शौचालय का कार्य दृढ संकंल्प एवं परहित टीम के सहयोग की वजह से शैचालय निर्माण का कार्य पूर्ण कराया गया जो कि ओमप्रकाश के लिए यह गौरव की बात थी अब उसके परिवार के सदस्यों को बाहर शौच के लिए नहीं जाना होगा ।

अब ओमप्रकाष शौच के लिए अपने ही घर के शौचालय में जाता है एवं उसने अब बाहर जाना बिल्कुल बंद कर दिया है पहले शौच के लिए उसे आधा किलोमीटर तक जाना होता था और साथ में मग्गा ले जाने की भी परेशानी होती थी लगभग 26 साल वह इस समस्या से जूझता रहा ।

ओमप्रकाश ने अपने पडोसियों को भी घर में शौचालय होने के फायदों के बारे में बताता है और ओमप्रकाश के घर में षौचालय की अच्छी सुविधा को देखकर उसके कुछ पडोसियों ने भी अपने घरों में शौचालय का निर्माण कराया हैं ।

****

स्त्रोत : एम पी वॉश, वाटर एड